International Journal of Sanskrit Research 2024; 10(3): 302-303

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2024; 10(3): 302-303
© 2024 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 16-02-2024
Accepted: 21-03-2024

डॉ. नीरज कुमार
डॉ. (उपाधि प्राप्त) (ल. ना. मि. विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

Corresponding Author:
डॉ. नीरज कुमार
डॉ. (उपाधि प्राप्त) (ल. ना. मि. विश्वविद्यालय, दरभंगा, बिहार, भारत

उद्धवगीता में भक्तियोग

डॉ. नीरज कुमार

DOI: https://doi.org/10.22271/23947519.2024.v10.i3e.2405

प्रस्तावना

श्रीमदभागवत के एकादश स्कन्ध के 31 अध्यायों में अध्याय 7 से 29 तक पुरे 23 अध्यायों में श्रीकृष्ण – उद्धव संवाद है। अवएव इन 23 अध्यायों कों ''उद्धवगीता'' कहा गया है । इसमें कुल श्लोक की संख्या 1ण्108 है। उद्धवगीता में उन सभी योगों (कर्मयोग, भक्तियोग एवं ज्ञानयोग) का उसी प्रकार विशद वर्णन है जिस प्रकार श्रीमद्भागवद्गीता में है ।

उल्लेखनीय है कि उद्धव को श्रीकृष्ण ज्ञान के क्षेत्र में अपने सदृश बतलायें है । उद्धव परम ज्ञानी होने के साथ . साथ भगवान, परम प्रेमी भक्त भी थें। भगवान की त्रिगुणमयी माया जो त्रिदेवों (ब्रहमा, विष्णु एवं शिव) को भी अपने प्रभाव में रखती है वह माया भी प्रेमी भक्त उद्धव का कुछ विगाड़ नहीं पाती। इसका कारण स्वयं भगवान श्रीकृष्ण श्रीमदभगवद्गीता के ''ज्ञानविज्ञानयो'' नामक सप्तम अध्याय में एवं भगवान के परम प्रेमी सखा उद्धव श्रीमदभागवत के एकादश स्कन्ध के षष्ठ अध्याय में बतालायें है । पहले श्री मदभगवदगीता में वर्णित भगवान श्रीकृष्ण की घोषणा का वर्णन हम यहाँ करते हैं महर्षि वेदव्यास के शब्दों में भगवान श्रीकृष्ण की उक्ति है ।..

दैवी हयेषा गुण्मयी म माया दुरत्या ।
मामेव ये प्रपंद्येन्ते मायामेतां तरन्ति ते ॥

श्रीमदभग० अ० – 7. श्लोक सं0 – 14

''अर्थात मेरी त्रिगुणमयी माया अत्यन्त दुस्तर है लेकिन जो भक्त एकमात्र मुझको ही अनन्य भाव से भजतें है – वे इस माया को अनायास पार कर जाते है ।''

इस उद्धवगीता के प्रवक्ता सच्चिदानन्द भगवान श्रीकृष्ण तथा श्रोता परम ज्ञान एवं परम प्रेमी भक्त उद्धव है । जैसे भगवान् श्रीकृष्ण प्रकृति से परे एवं अन्याय एवं परम ब्रहमाण्डाधिपति परात्पर हैं उसी प्रकार उद्धव गुणातीत अवस्था को प्राप्त अत्यतं उच्च कोटि के प्रेमी भक्त हों जो किसी भी परिस्थिति में भगवान को नहीं भुल पातें हैं । अतएव भगवान् श्रीकृष्ण में मनए बुद्धि चित एवं अहंकार के संलग्न रहने से उद्धव मायातीत अवस्था को प्राप्त है ।

इस उद्धवगीता में भक्तियोग को सर्वश्रेष्ठ एवं सुगम मार्ग बतलाते हुए भगवान् श्री कृष्ण ने भागवत धर्म का प्रतिपादन किया है । संक्षेत्र में भगवतधर्म श्रीमद्भगवदगीता में वर्णित निरूपण है । इसमें भी कर्मयोग से ज्ञानयोग को एवं ज्ञानयोग से भक्तियोग को श्रेष्ठ एवं सुगम बतलाया गया है । भागवत् धर्म संक्षेप में इस प्रकार है ।

''अपने को भगवान का नित्य सेवक समझकर सर्वदा भगवान के परायण होकर उसकी प्रसननता के लिए कर्त्तव्य कर्म का आचरण करना । भगवान् के सगुण साकार स्वरूप (सच्चिदानन्दमय रूप श्रीकृष्ण) के नाम, रूप, लीला, गुणधाम आदि के चिन्तन एवं मनन करना, सभी प्राणियों में उनके दर्शन करना तथा सभी जीवों को उस परातपर ब्रह्म में देखना सभी प्राणियों के हित में संलग्न रहना तथा किसी से वैर – भाव न रख कर सबके प्रति भगवत्प्रेम के सुन्दर भाव रखना भागवतधर्म है ।'' इस भागवतधर्म के पालन करने वाले परम भक्त काल के मस्तक पर अपने चरणों को रख कर भगवान के परम धाम (गोलोक, वैकुण्ठ, सांकेत आदि) प्राप्त करते हैं ।

भगवान श्रीकृष्ण सच्चिदानन्द भगवान् जिसे वेद एवं उपनिषद् 'निति' कहकर जिनकी महिमा का पूर्ण वर्णन करने में अपने को असमर्थ बतलाते हैं वही भगवान् श्रीकृष्ण है। श्रीमद्देवीभागवत के अनुसार प्रत्येक ब्रह्माण्ड में तीन प्रमुख देव – ब्रहमा, विष्णु एवं शिव होते हैं। ब्रह्माण्डों की संख्या भी अनन्त है ।

अतएव अनन्त ब्रहमा, विष्णु एवं शिव है। भगवती श्रीराधा एवं भगवान् श्रीकृष्ण के स्वेद से भगवान् महाविष्णु का अवतरण हुआ जिसके प्रत्येक रोम में एक.एक ब्रहमाण्ड एवं उस ब्रहमाण्ड के तीनों प्रमुख देवए लोकपाल एवं अन्य देव विद्यामान रहते हैं । ये महाविष्णु भगवान् श्रीकृष्ण के तेज के सोलवें अंश हैं। इसी भक्तियोग के रस से आन्नद की प्रति होती है । इस आन्नद को ब्रहम कहा गया है। आनन्नदों ब्रहमोति व्यजानात । (तैत्तिरीयोपनिषद्र षष्ठ अनुवाक से)

अर्थातः— आनन्द को ब्रहम निश्चयपूर्वक जाना ।

देवर्षि नारद के भक्तिसूत्र के अनुसार भक्ति परम प्रेमरूपा है ।

देवर्षि के शब्दों में—सा त्वस्मिन, परमप्रेमरूपा । (नारद भक्तिसुत्र – 2

अर्थात वह (भक्ति) ईश्वर के प्रति प्रेम रूप है । इसके आगे देवर्षि भक्ति की महिमा का वर्णन करते हुए कहते हैं ''अमृतस्वरूपा च।''

अर्थात भक्ति अमृतस्वरूपा भी है । उद्धवगीता श्रीमद्भागवताश होने के कारण वेद रूपी वृक्ष का मृदुल सरल फल ''सार'' है जिसके आस्वादन में आनन्द आता है जबकी उपनिषदों के सार तत्वों से बनी है । सिजके रहस्य को प्राप्त करने के लिए उद्धवगीता का आश्रय लेना पड़ता है । भक्ति योग प्रकरण विभिन्न ग्रन्थों में विलक्षण रूप से विवेचन भगवान श्रीकृष्ण द्वारा अपने अलग . अलग सखा के सम्मुख किये गये हैं । जबकी श्रमदभगवतोक्त उद्धवगीता के स्रोता गुणतीतावस्था को प्राप्त भगवान के परम प्रेमी भक्त उद्धव हैं भगवान की आज्ञानुसार भगवतधर्म के पालन द्वारा वर्णाश्रम धर्म की सीमा को पार करते हुए परम लक्ष्य भगवान की प्रेम भक्ति को प्राप्त कियें । जो उद्धवगीता का भक्तियोग पर्वती है।

उपर्युक्त विशलेषण से उद्धवगीता में भक्ति योग के विवेचनोंपरान्त साम्य एवं वैषम्य दृष्टिगोचर प्रतित होती है ।

References

1. Gita B, Mascaró J. Bhagavad Gita. Bhaktivedanta book trust, USA; c1994.
2. Saraswati PS, Maharaja G, Deva SB. SRIMAD BHAGAVAD-GITA. Chennai: Arsha Vidya Research and Publication Trust; c2012.
3. Sivananda S. Guru-Bhakti Yoga. Divine Life Society of South Africa; c2004.
4. Nadkarni MV. The Bhagavad-gita for the modern reader: History, interpretations and philosophy. Routledge India; c2019.
5. Feuerstein G. The Bhagavad-Gita: A New Translation. Shambhala Publications; c2011.